निःसंतान दंपति निराश न हो : डॉ. शशिवाला

अवेटा आईवीएफ में अब इन विट्रो फर्टिलाइजेशन सेंटर (आईवीएफ) सुविधा शुरू कर दी गई है। जिन दंपतियों के शारीरिक कमी की वजह से बच्चे नहीं हो पाते हैं वह इसका लाभ उठा सकते हैं। गौरतलब है कि इन विट्रो फर्टिलाइजेशन (आईवीएफ) एक सहायक प्रजनन तकनीक है, जहां भ्रूण के उत्पादन के लिए एक प्रयोगशाला में एक अंडे को शुक्राणु के साथ जोड़ा जाता है। इस प्रक्रिया में एक महिला रोगी के अंडाशय को हार्मोनल दवाओं के साथ उत्तेजित करना, अंडाशय (डिंब पिकअप) से अंडों को निक. ालना और शुक्राणु को एक प्रयोगशाला में एक विशेष तकनीक के माध्यम से उन्हें निषेचित करना शामिल है। निषेचित अंडे (जाइगोट) के 2 से 5 दिनों के लिए भ्रूण संवर्धन से गुजरने के बाद, इसे एक सफल गर्भावस्था की स्थापना के लिए उसी या किसी अन्य महिला के गर्भाशय में डाला जाता है। इस तकनीक का उपयोग महिलाओं में बांझपन के प्रमुख कारणों (ट्यूबल क्षति, एंडोमेट्रियोसिस, खराब डिम्बग्रंथि रिजर्व, पीसीओएस आदि) या पुरुष कारक (असामान्य वीर्य पैरामीटर आदि) या दोनों वाले जोड़ों में किया जाता है।

अवेटा आवीएफ के निदेशक डॉ. शशिवाला ने इस मौके पर उन्होंने कहा कि देश में कई दंपति बांझपन की समस्या से जूझ रहे हैं। उन्होंने कहा कि आईवीएफ केंद्र खुलने से पटना और आसपास के शहरों में रहने वाले ऐसे सभी लोगों को लाभ मिल सकेगा जो संतान सुख से वंचित हैं। अभी तक यह बेहद जटिल और महंगा इलाज हुआ करता था, इसलिए अब अवेटा आवीएफ में शुरू की गई इस सुविधा से मध्यम वर्ग के दंपति भी अपना उपचार करा सकेंगे।

डॉ. शशिवाला ने कहा कि आज के दौर में ऐसे मेरीड कपल्स की संख्या ज्यादा बढ़ रही है जिनकी अपनी कोई संतान नहीं है। इस सुविधा से पुरुष बांझपन और महिला बांझपन दोनों की समस्याओं का निदान संभव है। डॉ. शशिवाला ने बताया कि गायनी विभाग पिछले 4 वर्षों से बांझपन वाले जोड़ों का प्रबंधन कर रहा है। इसमें बांझ दंपति का काम, ओव्यूलेशन इंडक्शन, फॉलिक्युलर मॉनिटरिंग, बांझपन के लिए लेप्रोस्कोपिक और हिस्टेरोस्कोपिक सर्जरी शामिल हैं। उन्होंने बताया कि यह विभाग इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च की गाइडलाइन के अनुसार 45 वर्ष तक की महिलाओं और 50 वर्ष तक के पुरुषों के लिए यह सुविधा प्रदान करेगा। आईवीएफ केन्द्र में उपलब्ध सुविधाओं के बारे में कहा कि आईवीएफ केंद्र में पुरूष शुक्राणुओं की जांच हेतु एंड्रोलॉजी लैब ने कार्य करना शुरू कर दिया है और केन्द्र में अंतर्गर्भाशयी गर्भाधान (आईयूआई) की सुविधा भी उपलब्ध है। इसके अलावा इस केन्द्र में आईवीएफ प्रक्रिया भी शुरू हो चुकी है। उन्होंने बताया कि निकट भविष्य में अवेटा आवीएफ संतान से वंचित ऐसे माता-पिता का भी इलाज करेगा, जिनके शरीर में अण्डाणु या शुक्राणु नहीं बनते और जिन्हें स्पर्मदाता की आवश्यकता होती है।

निसंतान निवारण अभियान, गूंजेंगी किलकारियां

संतानसुख के लिए तरस रहे निसंतान दंपतियों की मन की मुराद पूरी होगी। शहर में आज कई अच्छे फर्टिलिटी क्लीनिक हैं, जहां आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं और नई तकनीकों के जरिये इलाज किया जाता है। आईयूआई, आईवीएफ, इक्सी या फिर ईम्सी जैसी तकनीक से दंपति संतान सुख प्राप्त कर सकते हैं। जरूरत है समय पर सही इलाज की। जानकारी के अभाव में अधिकतर लोग इलाज के लिए इधर-उधर भटकते रहते हैं। इससे समय भी जाया होता है और पैसा भी। इसलिए उन दंपतियों को जागरूक करने के लिए राजधानी में इन दिनों निसंतान निवारण अभियान चलाया जा रहा है। इसके लिए विभिन्न फर्टिलिटी क्लीनिक में निशुल्क चेकअप कैंप लगाए जा रहे हैं। इनमें दंपतियों को जांच के साथ है नई तकनीकों, इलाज और समस्या से जुड़ी जानकारियां दी जा रही हैं। डॉ. शशिवाला का कहना है कि बांझपन शब्द अभिशाप नहीं है। बांझपन एक समस्या है, जो तेजी से फैल रही है। इसका इलाज संभव है। बांझपन की प्रमुख वजह तनाव, बिगड़ा हुआ रहन-सहन, प्रदूषण और देर से शादी या फिर शादी के बाद फैमिली प्लानिंग में विलंब करना है। जरूरी है कि वे समय पर विशेषज्ञों से इलाज करवाएं।

डॉ. शशिवाला के अनुसार हजारों निसंतान दंपतियों की सूनी गोद यहां आबाद हुई है। विदेशों में बड़े शहरों में टेस्ट ट्यूब में बार-बार असफल होने वाले दंपति इलाज के लिए शहर में रह रहे हैं। आधुनिक इलाज से निसंतान दंपतियों के सूने आंगन में किलकारियां गूंज उठीं हैं। देश के बडे शहरों और महानगरों में इलाज करवा चुके निराश दंपति यहां इलाज करवा रहे हैं और उन्हें सफलता मिल रही है।